ग्रहण किया है, किंतु ऐसा कहना अतिशयोक्ति होगी। एच. सी. डारबी का कहना है - "यह उसी प्रकार सामाजिक विज्ञान में प्रमुख है जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान में गणित।" जहाँ अन्य सामाजिक विज्ञान मानवीय अनुभवों का सिर्फ एक पहलू से जुड़ा रहता है वहीं इतिहास का संबंध सारे पहलुओं से रहता है।

इतिहास की प्रकृति से संबंधित सबसे जिज्ञासापूर्ण विवाद जुड़ा है कि- क्या यह कला है अथवा विज्ञान? 19वीं सदी के अभूतपूर्व वैज्ञानिक उपलब्धियों ने सम्पूर्ण बौद्धिक जगत को प्रभावित किया फलतः सभी विषयों को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किये जाने अथवा कहने का फैशन चल पड़ा। जे.बी. ब्यूरी महोदय ने कहा कि - इतिहास विज्ञान है, न कम न ज्यादा। विको, कॉम्ते, स्पेंग्लर जैसे आरम्भिक चिंतक जो इस बात के मौलिक समर्थक थे कि इतिहास विज्ञान है, का भी मानना था कि विज्ञान के समान इतिहास भी ऐसी ज्ञान की विधा है जो तथ्यों के सतर्कतापूर्ण अध्ययन एवं विश्लेषण पर आधारित है तथा इसके पश्चात् ही इसमें कुछ निष्कर्षों पर पहुँचा जा सकना सम्भव होता है। A. Marwick refutes this argument & maintains that even scientific laws are taken as working hypothesis now a days not as absolute truths or laws. ई. एच. कार का भी मानना है कि आज विज्ञान भी नियमों के तहत अपनी बातों को नहीं कहता और विज्ञान एवं इतिहास में अब निश्चितता का अभाव सा हो चला है, लेकिन उसी वक्त कार महोदय ने इतिहास को विज्ञान न स्वीकारने संबंधी तर्कों को नकार दिया है।

इतिहासकार कार महोदय इस बात को अस्वीकार करते हैं कि - इतिहास विशिष्ट तथा असाधारण का अध्ययन करता है जबकि विज्ञान विश्वजनीन एवं सामान्य का। उनका कहना है कि दरअसल इतिहास सामान्यीकरण से ही अपनी खुराक पाता है। जी. आर. एल्टन ने भी स्वीकार

Scanned with CamScanner

किया है कि- इतिहासकार को ऐतिहासिक तथ्यों के इकट्ठा करनेवाले से अलग करनेवाली चीज है- सामान्यीकरण। सामान्यीकरण का सिद्धांत इतिहासकार के निष्कर्ष को प्रायः प्रभावित करता है। और जब इतिहासवेत्ता ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अपने सर्वेक्षणों को रखकर " " है सामान्यीकरण करता है जिससे वह संबंधित होता है, तो वास्तव में वह एक घटना समूह से प्राप्त जानकारी को दूसरी घटनाओं के समूह से जोड़कर देखता है। अतः यह कहना गलत होगा कि विज्ञान की भांति इतिहास सीख प्रदान नहीं करता। वास्तव में मानव समाज को सीख देना ही इतिहास का प्रमुख उद्देश्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ के संविधान निर्माण में राजनयिकों ने लीग ऑफ नेशन्स की असफलता से सबक ली थी।

'भविष्यवाणी' विज्ञान की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है जो इतिहास में नहीं पाया जाता ऐसा आर्थर मॉरविक का मानना है। यह सही है कि इतिहास भविष्यवाणी नहीं कर सकता लेकिन कार महोदय का कहना है कि सामान्यीकरण के जरिये इतिहासकार जो दिशा निर्धारित करता है वह कम महत्वपूर्ण नहीं होता। इसके अतिरिक्त उनका कहना है कि विज्ञान भी कुछ मुद्दों पर ठोस भविष्यवाणी का दावा नहीं कर सकता, किंतु फिर भी दोनों में तर्क निकालने की पद्धति में मौलिक समानता है।

इसके अलावे विज्ञान जहां वस्तुनिष्ठ होता है वहीं इसके विपरीत इतिहास का स्वरूप विषयनिष्ठ होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान के निष्कर्षों को समुचित प्रमाणों अथवा साक्ष्यों के आधार पर स्वीकार किया जाता है जबकि इतिहास लेखक की भावनाओं एवं व्यक्तित्व से ~~ओत~~ ओत प्रोत रहता है। इसके अतिरिक्त एक व्यक्तियों के उपलब्धियों को सभी लोग विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं परिणामस्वरूप वैज्ञानिक स्वरूप को जहाँ सार्वभौम मान्यता दी जाती है वहीं इतिहासकार का निष्कर्ष सार्वभौमिक नहीं होता। किंतु इतिहास संबंधी यह अवधारणा सर्वथा सत्य नहीं है। आगस्त कोम्टे

Scanned with CamScanner

का कथन है जब इतिहासकार व्यक्तिगत भाव का परित्याग कर सिद्धांत का आश्रय लेता है तो इतिहास का विषयनिष्ठ स्वरूप भी वस्तुनिष्ठ में परिवर्तित हो जाता है। किंतु विगत दशकों में इतिहास क्षेत्र में अर्थशास्त्र, पुरातत्व, न्यूमिसमेटिक्स आदि का अध्ययन इतिहास को वस्तुनिष्ठ स्वरूप प्रदान करता है।

इतिहास में धर्म एवं नैतिकता के समावेश से इंकार नहीं किया जा सकता है किंतु वर्तमान समय के लिए यह अच्छा नहीं है। जब से इतिहास को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किये जाने का प्रयास शुरू हुआ तभी से इतिहास का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप उभरकर सामने आया। इतिहास अध्ययन आज उत्तरोत्तर धर्म से अप्रभावित होता जा रहा है। मार्क्सवादी इतिहासकारों पर धर्म का कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता। इस प्रकार विज्ञान की भाँति इतिहास में धर्म एवं धार्मिक भावनाओं का कोई स्थान नहीं रह गया है। आजकल इतिहास में नैतिकता का कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है। विज्ञान की भाँति इतिहास में इसका कोई स्थान नहीं है। इतिहासकार का कार्य तथ्यों के आधार पर किसी शासक अथवा व्यक्ति का मूल्यांकन करना है न कि उसके व्यक्तिगत जीवन संबंधी बातों में नैतिक न्याय देना। यह गुण इतिहास को विज्ञान के नजदीक ले जाता है। मॉरविक ने इतिहास को विज्ञान की श्रेणी में रखने पर जोर देते हुये कहा है - इन दोनों के बीच कोई विशेष फर्क नहीं है उनका कहना है कि सामाजिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान से पद्धति में भिन्न न होकर अध्ययन की प्रकृति में भिन्न होता है। कार महोदय ने भी इस बात पर बल देते हुये कहा है कि - इतिहासकार एवं भौतिक विज्ञानी दोनों ही व्याख्यायित करने की लालसा के मूलभूत उद्देश्यों में तथा प्रश्न एवं उत्तर की मूलभूत प्रक्रिया में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

यद्यपि पद्धति में इतिहास को विज्ञान के समरूप मान लिये जाने के बावजूद इतिहास में कलात्मक गुण को बिलकुल नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। किंतु ब्यूरी एवं सीले जैसे इतिहासकारों ने इतिहास में कला

के तत्व को मौजूद रहने से इंकार किया है क्योंकि इनका मानना है कि इससे इतिहास के वैज्ञानिक स्वरूप में विकृति आयेगी। वे इतिहास को सत्य का अन्वेषण माध्यम मानते हैं तथा इतिहासकार का काम सत्य को उसी रूप में प्रस्तुत कर देना होता है, ऐसा स्वीकार करते हैं। इनका कहना है कि इतिहास को कला विशेषकर साहित्य मानने का अभिप्राय: यह होगा कि इसमें 'कल्पना-शीलता' को स्वीकारा जाये जो सच्चाई को प्रभावित करता है। किंतु इतिहास में कल्पना के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। कॉलिंगवुड ने 'कल्पनाशीलता' को इतिहास का केन्द्रबिन्दु माना है क्योंकि इतिहासकार अतीत का पुनर्निर्माण तब तक नहीं कर सकता है जब तक अतीत के क्रिया-कलापों को कल्पनाशीलता के माध्यम से खोजने का प्रयास न करे। कार महोदय ने भी इस बात से अपनी सहमति जाहिर की है एवं उनका कहना है कि इतिहासकारों को उनलोगों के मस्तिष्क के साथ 'कल्पनाशील समझ' (imaginative understanding) स्थापित कर लेना चाहिए जिन लोगों के बारे में वह लिख रहा होता है। उसी प्रकार एक पाठक तब तक लाभ प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह इतिहासकार के मानसिक स्वरूप को अपने मस्तिष्क में पुनर्निर्मित न कर ले जो कि परिकल्पना से ही संभव है। वस्तुत: यदि इतिहास से कला को पूर्णत: निकाल दिया जाये तो इसका प्रस्तुति-करण नीरस हो जायेगा एवं पाठकों के लिए यह अरुचिकर प्रतीत होगा, इस प्रकार इतिहास का महत्वपूर्ण उद्देश्य भी प्रभावित होगा। कारलायले (Carlyle) एवं मैकाले जैसे इतिहासकारों के प्रसिद्धि का मूल कारण इतिहास को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करना है।

इस प्रकार वस्तुत: इतिहासकला एवं विज्ञान दोनों हैं कार महोदय का सही कहना है कि - वैज्ञानिक, समाज विज्ञानी तथा इतिहास-कार एक ही अध्ययन, मनुष्य एवं उसके वातावरण, मनुष्य के उसके वातावरण पर पड़नेवाले प्रभाव और वातावरण के मनुष्य पर पड़नेवाले

Scanned with CamScanner

प्रभाव के अध्ययन के विभिन्न शाखाओं में कार्यरत है। इन अध्ययन का उद्देश्य एक ही है कि मनुष्य को, उसकी वातावरण की गहरी जानकारी देना और वातावरण पर उसके प्रभुत्व को बढ़ाना।" जी० एम० ट्रेवेलियन ने कहा है- ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की पद्धति वैज्ञानिक होनी चाहिए तथा इसके लेखन शैली साहित्यिक।

इस प्रकार अंत में हम कह सकते है कि इतिहास अपने रूप में कला है एवं तकनीक में विज्ञान के समान। (History in its style, is art and in its technique is more akin to science.)

~ o ~